UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 22 महाराणा प्रताप (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

त्याग, बलिदान, निरन्तर संघर्ष और स्वाधीनता के रक्षक के रूप में देशवासी महाराणा प्रताप को याद करते हैं। इनका जन्म उदयपुर नगर में हुआ। ये राणा सांगा के पुत्र महाराणा उदयसिंह के सुपुत्र थे। गौरव, सम्मान, स्वाभिमान व स्वतंत्रता के संस्कार इन्हें विरासत में मिले थे। सन 1572 ई० में प्रताप के शासक बनने के समय संकट की स्थिति थी। प्रताप को अकबर की सम्पन्न मुगल सेना व मानसिंह की राजपूत सेना से लोहा लेना पड़ा। अकबर की कूटनीति के कारण प्रताप का भाई शक्तिसिंह भी मुगल सेना के साथ था; फिर भी, अपनी छोटी-सी सेना से प्रताप ने हल्दी घाटी में मोर्चा जमाया और मुगल सेना को नाकों चने चबाने पड़े। मुगल सेना की भारी क्षति हुई, परन्तु विशाल सैन्य शक्ति के दबाव को देखकर राणा प्रताप को युद्ध से हटना पड़ा। इस घटना में सरदार झाला, राणा के घोड़े चेतक और अनुज शक्ति को प्रसिद्धि मिली। झाला ने ताज पहनकर अपने आत्मबलिदान से प्रताप को बचाया, चेतक ने प्रताप को युद्ध-भूमि से निकालकर प्राण त्यागे और अनुज शक्तिसिंह ने भी पश्चात्ताप करके क्षमा माँगी।

महाराणा प्रताप ने छापामार युद्धनीति अपनाकर बीस वर्ष तक मुगलों से संघर्ष किया। इन्हें परिवार सहित जंगलों में भटककर घास की रोटी तक खानी पड़ी। इन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक : चितौड़ पर अधिकार नहीं हो जाएगा; तब तक मैं जमीन पर सोऊंगा और पत्तलों पर भोजन करूंगा। इसका जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इनके मंत्री भामाशाह ने सारी सम्पत्ति राणा को सौंप दी। मेवाड़ की प्रभुसत्ता की रक्षा और स्वाधीनता के लिए राणा प्रताप जिए और मरे। इनके अदम्य साहस और शौर्य की सराहना करते हुए कर्नल टाड ने लिखा है, “अरावली की पर्वतमाला में एक भी घाटी ऐसी नहीं, जो प्रताप के पुण्य से पवित्र न हुई हो, चाहे वहाँ उनकी विजय हुई या यशस्वी पराजय!”

https://www.evidyarthi.in/